

ये अव्यक्त इशारे

ज्वालास्वरूप स्थिति में रह शक्तिशाली याद का अनुभव करो

26-07-2026

सारथी अर्थात् आत्म-अभिमानि क्योंकि आत्मा ही सारथी है। ब्रह्मा बाप ने इस विधि से नम्बरवन की सिद्धि प्राप्त की। तो फॉलो फादर करो। जैसे बाप देह को अधीन कर प्रवेश होते अर्थात् सारथी बनते हैं देह के अधीन नहीं होते, इसलिए न्यारे और प्यारे हैं। ऐसे ही आप सभी ब्राह्मण आत्माएं भी बाप समान सारथी की स्थिति में रहो। सारथी स्वतः ही साक्षी हो कुछ भी करेंगे, देखेंगे, सुनेंगे और सब-कुछ करते भी माया की लेप-छेप से निर्लेप रहेंगे।

Stay in the volcanic stage and experience powerful remembrance.

You, the soul, are a charioteer and to be a charioteer means to be soul conscious. Father Brahma became the foremost soul by practising this. Therefore, follow the father! The Father enters a body and controls it, that is, He becomes the Charioteer. He doesn't depend on that body, and this is why He remains loving and detached. In the same way, all of you Brahmin souls have to maintain the stage of a charioteer, like the Father. When you are the charioteer of your body, you naturally become a detached observer and remain immune to any effect of Maya in whatever you do, see or hear.